Department of Philosophy
D. B. COLLEGE, JAYNAGAR, MADHUBANI (BIHAR)
(A Constituent unit of L. N. Mithila University, Darbhanga)
By:- Dr. Kumar Sonu Shankar
Assistant Professor (Guest)
April 8, 2020
8210837290, 8271817619
Kumar999sonu@gmail.com

Class B.A. Part I

Date 8th April 2020

Topic स्पिनोजा का ईश्वर विचार

स्पिनोजा की दृष्टि में ईश्वर ही एक अद्वैत, आनंत, निरपेक्ष, पूर्ण द्रव्य है। चित् अचित् आदि सभी ईश्वर के गुण है। ईश्वर ही समस्त सृष्टि का कारण है, परंतु स्वयं अकारण है। संपूर्ण सृष्टि ईश्वर प्रसूत है, अर्थात ईश्वर ही सृष्टि का सर्वप्रथम कारण है। सृष्टा और सृष्टि के संबंध में स्पिनोजा का कहना है कि सृष्टि सार्वभौम ईश्वर का नियत स्वभाव है या सहज गुण है। जिस प्रकार 'त्रिभुज के तीनों कोण मिल कर दो समकोण के बराबर होते हैं' उसी प्रकार संसार के समस्त गुण और कार्य सार्वभौम ईश्वर की आवश्यक अभिव्यक्ति है। दूसरे शब्दों में, हम कह सकते हैं कि जिस प्रकार तीनों कोणों के बिना त्रिभुज की सत्ता नहीं उसी प्रकार सृष्टि के बिना सृष्टा अर्थात ईश्वर का विचार ही असंगत है। ईश्वर अनंत है, उसके गुण अनंत हैं, उसके अभिव्यक्ति भी अनंत प्रकार से ही होती है। सार्वभौम ईश्वर के अतिरिक्त कोई पदार्थ नहीं है। विश्व उसकी आवश्यक अभिव्यक्ति है, जैसे तीनों कोण त्रिभुज की आवश्यक अभिव्यक्ति है।

ईश्वर सृष्टि का उपादान और निमित्त दोनों कारण है। सृष्टि ईश्वर का स्वभाव है। यह स्वभाव नियत या अनिवार्य है। इसका अर्थ यह नहीं है कि ईश्वर का कोई नियंत्रण करने वाला है। वह परम स्वतंत्र है, क्योंकि वह सृष्टि का परम कारण है। सृष्टि सृष्टा का उसी प्रकार अनिवार्य परिणाम है, जिस प्रकार तीनों त्रिभुज के परिणाम है। ईश्वर को सृष्टि का कारण कहने से स्पिनोजा का तात्पर्य यह है कि ईश्वर सृष्टि का अधिष्ठान है। जिस प्रकार दिक् अनंत होते हुए भी त्रिभुज, चतुर्भुज आदि का अधिष्ठान कारण है, उसी प्रकार ईश्वर भी संपूर्ण सृष्टि का कारण है। ईश्वर के बिना हम सृष्टि की कल्पना नहीं कर सकते। जैसे दिक् के बिना त्रिभुज आदि की कल्पना नहीं हो सकती। इससे स्पष्ट प्रतीत होता है ईश्वर तथा सृष्टि में तादात्म्य (Relation of Identity) संबंध है। सृष्टि ईश्वर के बाहर नहीं, जैसे त्रिभुज आदि के सत्ता अनंत दिक् से इतर नहीं। जैसे अनंत दिक् के त्रिभुज, वृत्त, चतुर्भुज आदि सभी परिणाम है, उसी प्रकार एक, अद्वैत, स्वयंभू, द्रव्यरूप ईश्वर के ही विश्व आदि सभी परिणाम है।

विश्व ईश्वर की अनिवार्य अभिव्यक्ति होने के कारण ईश्वर स्वरुप ही है। कार्य कारण से पृथक नहीं, आधेय आधार से भिन्न नहीं, अतः विश्व की सत्ता भी ईश्वर से अलग नहीं। ईश्वर और जगत कारण और कार्य में आधेय और अधिष्ठान में पूर्णतः अभेद तादात्म्य है। इसी कारण स्पिनोजा संपूर्ण विश्व को ईश्वररूप (Natura Naturata) मानते हैं। सृष्टि सृष्टा की आवश्यक अभिव्यक्ति होने के कारण सृष्टा स्वरूप ही है। प्रकृति का कण–कण ईश्वर प्रदत्त होने के कारण ईश्वरमय है। यही ईश्वर का विश्वात्मा रूप है, परंतु ईश्वर अनंत है। उसकी सत्ता की सीमा नहीं, वह अनंत है। अर्थात वह केवल विश्वरूप ही नहीं विश्वातीत भी है। कार्य कारण की अभिव्यक्ति होने से वह कारण रूप ही है, परंतु कारण की सत्ता कार्य के परे भी है। जगत अनंत ईश्वर की सीमा नहीं है, ईश्वर असीम है। ईश्वर अनंत है, उसके गुण भी अनंत हैं। इन अनंत गुणों

By:- Dr. Kumar Sonu Shankar
Assistant Professor (Guest)
April 8, 2020
8210837290, 8271817619
Kumar999sonu@gmail.com

में प्रत्येक गुण ईश्वर के अनंत सताओं की अभिव्यक्ति करता है। स्पिनोजा ईश्वर के विश्वात्म तथा विश्वातीत दोनों स्वरूपों को स्वीकार करते हैं।

सर्वेश्वरवाद :– स्पिनोजा संपूर्ण सृष्टि को ईश्वर रूप ही मानते हैं। जिस प्रकार त्रिभुज, चतुर्भुज आदि सभी विकार हैं, उसी प्रकार संपूर्ण सृष्टि ईश्वर की अभिव्यक्ति है। विश्व ईश्वर का स्वरूप है। ईश्वर और उसका स्वरूप विश्व एक ही है। कारण से पृथक कार्य की सत्ता नहीं, अतः विश्व की भी ईश्वर से अलग कोई सत्ता नहीं। संपूर्ण सृष्टि ईश्वर में ही व्याप्त है। यही स्पिनोजा का **सर्वेश्वरवाद** है। स्पिनोजा ईश्वर को समस्त व्यवहारिक जगत की कारण प्रकृति (Natura Naturanas) मानते हैं तथा ईश्वर को ही समस्त जागतिक पदार्थों की कार्य प्रकृति (Natura Naturata) भी मानते हैं। तात्पर्य यह है कि विश्व का अधिष्ठान या आधार ईश्वर है, अतः ईश्वर से पृथक विश्व की सत्ता नहीं है।

द्रव्य :– ईश्वर ही परम द्रव्य है, जिससे संपूर्ण सृष्टि का उद्‌भव हुआ है। स्पिनोजा के अनुसार द्रव्य वह है जिसकी सत्ता स्वतंत्र हो, जिसका ज्ञान किसी दूसरे ज्ञान की अपेक्षा न करता हो। अतः द्रव्य की सत्ता तथा ज्ञान दोनों स्वतंत्र है। स्पिनोजा के अनुसार ईश्वर ही परम द्रव्य है। वह एक अद्वैत, परम स्वतंत्र, सबका कारण होते हुए भी स्वयं अकारण, स्वयंभू, स्वतः सिद्ध है।

स्पिनोजा के अनुसार द्रव्य के निम्न लक्षण हैं :–

1. **द्रव्य स्वतंत्र है।** द्रव्य को स्वतंत्र कहने का तात्पर्य यह है, कि द्रव्य सबका आधार होते हुए भी स्वयं निराधार है।
2. **द्रव्य निरपेक्ष है।** स्वंय अकारण होने का कारण सापेक्ष नहीं है। जो कारण होते हैं वह कारण सापेक्ष कहे जाते हैं। अकारण होने से द्रव्य निरपेक्ष है।
3. **द्रव्य अद्वितीय है।** :–द्रव्य को एक से अधिक मानने से उसकी सत्ता सीमित होगी। अतः द्रव्य को स्वतंत्र मांनने के लिए उसे अद्वितीय स्वीकार करना आवश्यक है।
4. **द्रव्य अपरिमित परिच्छिन्न है।** सार्वभौम, एक, परम स्वतंत्र होने से द्रव्य कि सत्ता किसी अन्य पर आश्रित नहीं। एक होने से वह असीम है।
5. **द्रव्य अपरिमित है।** द्रव्य को स्वतः सिद्ध करने से तात्पर्य है कि द्रव्य ज्ञान का आधार द्रव्य ही है। द्रव्य ज्ञान में किसी अन्य ज्ञान की अपेक्षा नहीं है, अर्थात द्रव्य स्वयं अपना प्रमाण है, स्व–संवेद्य है।

स्पिनोजा के ईश्वर विचार की समालोचना

स्पिनोजा के अनुसार द्रव्य सार्वभौम और निरपेक्ष है। यह सार्वभैम द्रव्य एक, अद्वैत, आनतद और अर्निवचनीय ईश्वर है। विश्व ईश्वर की अनिवार्य अभिव्यक्ति है। सर्वेश्वरवादी स्पिनोजा के अनुसार संपूर्ण विश्व में ईश्वर का स्वरूप है। ईश्वर अकारण होकर भी सब का कारण है। परंतु यहां एक आवश्यक प्रश्न है कि ईश्वर और विश्व में किस प्रकार की कारणता है? किस प्रयोजन से ईश्वर विश्व की सृष्टि करता है, स्पिनोजा के अनुसार कारण का अर्थ **'अधिष्ठान'** है तथा कार्योत्पत्ति का अर्थ **'अभिव्यक्ति'** है। ईश्वर विश्व का कारण है, इसका अर्थ है ईश्वर ही विश्व का अर्थ स्थान है अधिष्ठान है, आश्रय या आधार है। पुनः विश्व ईश्वर से

उत्पन्न होता है का अर्थ है, विश्व ईश्वर की आवश्यक अभिव्यक्ति है। जैसे त्रिभुज आदि अनंत दिक् के विकार मात्र हैं, वैसे ही विश्व ईश्वर का विकार मात्र है। स्पष्टतः स्पिनोजा का ईश्वर–विचार परंपरागत विचार से भिन्नत है। स्पिनोजा के पूर्व ईश्वर को डीमर्ज (Demiurge) माना जाता था। ईश्वर की यह धारणा प्रयोजनवादी (Telological) है। स्पिनोजा के अनुसार प्रयोजन या उद्देश्य तो ईश्वर को सीमित कर देता है। अतः स्पिनोजा निरूद्धेश्य–निरपेक्ष ईश्वर को स्वीकार करते हैं। स्पिनोजा के अनुसार ईश्वर विश्व का कारण है; परंतु निष्प्रयोजन रूप से। सृष्टि की प्रयोजनवादी धारणा धार्मिक भावना को संतुष्ट करती है, दार्शनिक बुद्धि को नहीं। अनेक विद्वान समालोचकों का कहना है कि स्पिनोजा का विचार यहूदी धर्म ग्रंथों से प्रभावित है। यहूदी धर्म ग्रंथों में ईश्वर विचार के संबंध में चार प्रमुख बातें बताई गई हैं 1. ईश्वर की सत्ता 2. ईश्वर की अनंतता तथा व्यापकता 3. ईश्वर का जगत्कारणत्व और प्राकृतिक नियंत्रण तथा 4. सुख दुख आदि फलों का अभिधान करना। स्पिनोजा अपने ईश्वर विचार में इन चारों बातों को मानकर चलते हैं।

Dr. Kumar Sonu Shankar
Assistant Professor (Guest)
Department of Philosophy
Mobile 8210837290
Whatsapp 8271817619
E-mail Id – kumar999sonu@gmail.com